एशिया — प्राकृतिक वनस्पति (NATURAL VEGETATION)

प्राकृतिक वनस्पति किसी महाद्वीप अथवा देश को प्रकृति की ओर से निःशुल्क दिया गया एक बहुमूल्य उपहार है। कोपेन ने प्राकृतिक वनस्पति को जलवायु का सच्चा मापदण्ड माना है।

डा० स्टाम्प के शब्दों में — " एशिया में मिलने वाले प्रमुख जलवायु विभाग एक अपने ही प्रकार की वनस्पति को जन्म देते हैं।"

एशिया महाद्वीप में अनेक प्रकार की जलवायु दशाएँ, मिट्टियों तथा धरातल की बनावट में मिलने वाली विभिन्नताओं के कारण अनेक प्रकार की प्राकृतिक वनस्पति पायी जाती है। सामान्य रूप से एशिया की वनस्पति को तीन भागों में बाँटा गया है।

(1) वन (2) घास के मैदान (3) मरुस्थलीय वनस्पति।

इन तीनों का सम्मिलित वर्गीकरण इस प्रकार है।

(1) भूमध्य रेखीय सदाबहार वन
(2) उष्ण मानसूनी वन
(3) शीतोष्ण मानसूनी पतझड़ वन
(4) कोणधारी वन
(5) भूमध्य सागरीय झाड़ी वन
(6) शीतोष्ण घास के मैदान
(7) उष्ण मरुस्थलीय वनस्पति
(8) शीतोष्ण मरुस्थलीय वनस्पति
(9) शीत मरुस्थलीय वनस्पति

(1) भूमध्य रेखीय सदाबहार वन।

भूमध्य रेखा के समीप स्थित देशों इण्डोनेशिया, मलेशिया, फिलीपाइन्स, द० पू० भारत, एवं श्रीलंका आदि में इस प्रकार के घने सदाबहार वन पाये जाते हैं। इन वनों में कठोर लकड़ी के 60 मी० से 100 मी० तक ऊँचे वृक्ष मिलते हैं। ये वर्ष भर हरे भरे रहते हैं, अनेक प्रकार की लताएँ इन वृक्षों के तनों से लिपटी रहती हैं। इन वनों के मुख्य वृक्ष महोगनी, गटापार्चा, नारियल, रबड़, बाँस, बेंत, सिनकोना, रोजवुड आदि हैं। ~~मानसून के कारण~~ प्रतिकूल परिस्थितियों के कारण इन वनों का प्रयोग कम होता है।

(2) उष्ण मानसूनी वन।

इस प्रकार के वन उष्ण मानसूनी जलवायु वाले प्रदेशों में स्थित भारत, पाकिस्तान, म्यांमार, लाओस, कम्बोडिया, थाईलैण्ड एवं दक्षिणी चीन आदि देशों में पाये जाते हैं। सामान्य रूप से जिन भागों में 200 सेमी० अधिक वर्षा होती है वहाँ सदाबहार मानसून वन मिलते हैं, जिसमें मुख्य वृक्ष सिनकोना, महोगनी, रबड़, बाँस, नारियल आदि हैं। जिन भागों में 100 से 200 सेन्टी० वर्षा होती है वहाँ चौड़ी पत्ती वाले मानसूनी पतझड़ वन मिलते हैं जो प्रतिवर्ष ग्रीष्म ऋतु आरम्भ होने से पूर्व अपनी पत्तियाँ गिरा देते हैं। इस वन के मुख्य वृक्ष शाल, सागौन, शीशम, आम, महुआ, जामुन, नीम, इमली आदि हैं। 50 से 100 सेन्टी० वर्षा वाले क्षेत्रों में घास के मैदान तथा झाड़ी वन और 50 सेन्टी० से कम वर्षा वाले क्षेत्रों में कटीली झाड़ियाँ मिलती हैं जिनमें टैंटी, बेर, खजूर प्रमुख हैं।

(3) शीतोष्ण मानसूनी पतझड़ वन।

इस प्रकार के वन एशिया शीतोष्ण मानसूनी जलवायु वाले प्रदेशों जिनमें उत्तरी चीन, मंचूरिया, कोरिया, जापान आदि सम्मिलित हैं, में पाये जाते हैं। इन वनों में चौड़ी पत्ती एवं नुकीली ~~भाग~~ पत्ती वाले दोनों प्रकार

Scanned by CamScanner

के वृक्ष मिलते हैं जो वर्ष में एक बार शुष्क ऋतु के आरम्भ होने से अपनी पत्तियाँ गिरा देती हैं। इन वनों के मुख्य वृक्ष बबूल, मेपल, लारेल, कपूर, कुंग, शहतूत आदि हैं। तारपीन का तेल प्रदान करने वाले वृक्ष यहाँ अधिक संख्या मिलते हैं। इन वनों का आर्थिक महत्व अधिक है।

(4) कोणधारी वन। — एशिया महाद्वीप के शीत-शीतोष्ण प्रदेशों में यूराल पर्वत से लेकर प्रशान्त महासागर तट तक नुकीली पत्ती वाले सदाबहार वन पाये जाते हैं, जिन्हें टैगा वन भी कहते हैं। साइबेरिया का यह प्रदेश जिनमे ये वन फैले हुए हैं, एशिया की कठोर शीत एवं साधारण वर्षा वाले क्षेत्र हैं, कठोर शीत एवं वर्फ से रक्षा करने के लिए इनकी पत्तियाँ नुकीली तथा अधिक वाष्पीकरण से बचने के लिए इनके तने एवं डालियाँ चिकनी एवं मोटी होती हैं। ये वन एशिया के बहुमूल्य मुलायम के वृक्ष के भंडार हैं जिनके मुख्य वृक्ष फर, स्प्रूस, लार्च, चीड़, हेमलाक, सीडर आदि हैं। इन वनों पर एशिया के कागज लुग्दी, दियासलाई तथा फर्नीचर (व्यवसाय) मुख्य रूप से निर्भर हैं।

(5) भूमध्य सागरीय झाड़ी वन — द० प० एशिया के भूमध्य सागरीय जलवायु वाले प्रदेशों में इस प्रकार के झाड़ी वन टर्की, सीरिया, जोर्डन, इजराइल, लेबनान, साइप्रस द्वीप तथा इराक एवं ईरान के कुछ भागों इस प्रकार की वनस्पति मिलती है। शुष्क गर्मी एवं वाष्पीकरण से बचने के लिए इन वृक्षों की पत्तियाँ चिकनी, छालें मोटी, तने गठीले, डालियाँ कँटीली एवं जड़े लम्बी होती हैं। इन वनों में रसदार वृक्षों की प्रधानता होती है। इन वनों में अनेक बेलें तथा झाड़ी कुंज भी मिलते हैं। इन वनों के मुख्य वृक्ष नीबू, नारंगी, माल्टा, अंजीर, जैतून, अखरोट, कार्क, लारेल आदि हैं।

(6) शीतोष्ण घास के मैदान। शीतोष्ण घास के मैदान एशिया के मध्य अक्षांशीय भागों में कैस्पियन सागर के उत्तरी भाग से लेकर बैकाल झील के पश्चिमी तट तक पाये जाते हैं। मुख्य रूप से इन घास के मैदानों का विस्तार द० प० साइबेरिया के कजाकिस्तान एवं किरगीजिया प्रदेशों में है। कुछ घास के मैदान पू० में चुरियाँ के निचले प्रदेश तथा मंगोलिया के अर्द्ध मरुस्थल प्रदेश में पाये जाते हैं। एशिया के घास के मैदान स्टेपी के नाम से प्रसिद्ध हैं। इस क्षेत्र की ग्रीष्म ऋतु की कोष्ण गर्मी, साधारण वर्षा, शीत ऋतु का न्यूनतम तापमान एवं हल्की मिट्टी के कारण यहाँ कोमल एवं छोटी गुच्छेदार घासों के मैदान पाये जाते हैं।

(7) उष्ण मरुस्थलीय वनस्पति। — एशिया के उष्ण मरुस्थल मुख्यतः द० प० एशिया में मिलते हैं। जिसका विस्तार अरब से लेकर इराक, ईरान, अफगानिस्तान, बिलोचिस्तान, सिन्ध तथा थार प्रदेश तक है। नमी एवं वर्षा का अभाव, उच्च तापमान तथा शुष्क मौसम के कारण इस वनस्पति क्षेत्र में कँटीली झाड़ियाँ, बबूल, सूखी घास तथा खजूर अलावा कुछ भी नहीं उगता। ग्रीष्म ऋतु में चारों ओर रेत के टीले ही दिखाई देते हैं।

(8) शीतोष्ण मरुस्थलीय वनस्पति। — शीतोष्ण मरुस्थल एशिया के मध्य भागों में मिलते हैं। इनका विस्तार मंगोलिया, तिब्बत तथा तुर्किस्तान के पठारी भागों में है। मंगोलिया का गोबी मरुस्थल विश्व का प्रमुख शीतोष्ण मरुस्थल है। वर्षा की कमी के कारण यहाँ सिर्फ शुष्क घासें एवं कँटीली झाड़ियाँ पायी जाती हैं।

(9) शीत मरुस्थलीय वनस्पति। — एशिया के शीत मरुस्थल ध्रुवीय क्षेत्रों के टुण्ड्रा प्रदेशों में फैले हुए हैं। कठोर शीत एवं वर्फीले तूफान, ठण्डी हवाएँ, निम्न तापमान एवं वर्षा के अभाव के कारण किसी भी प्रकार की वनस्पति नहीं उगने पाती। मात्र

VEGETATION)

ऋतु में उगने वाले रंग बिरंगे फूलों वाले पौधों को छोड़कर काई तथा लिचिन के अलावा कोई वनस्पति नहीं मिलती है।

एशिया - वनस्पति विभाग

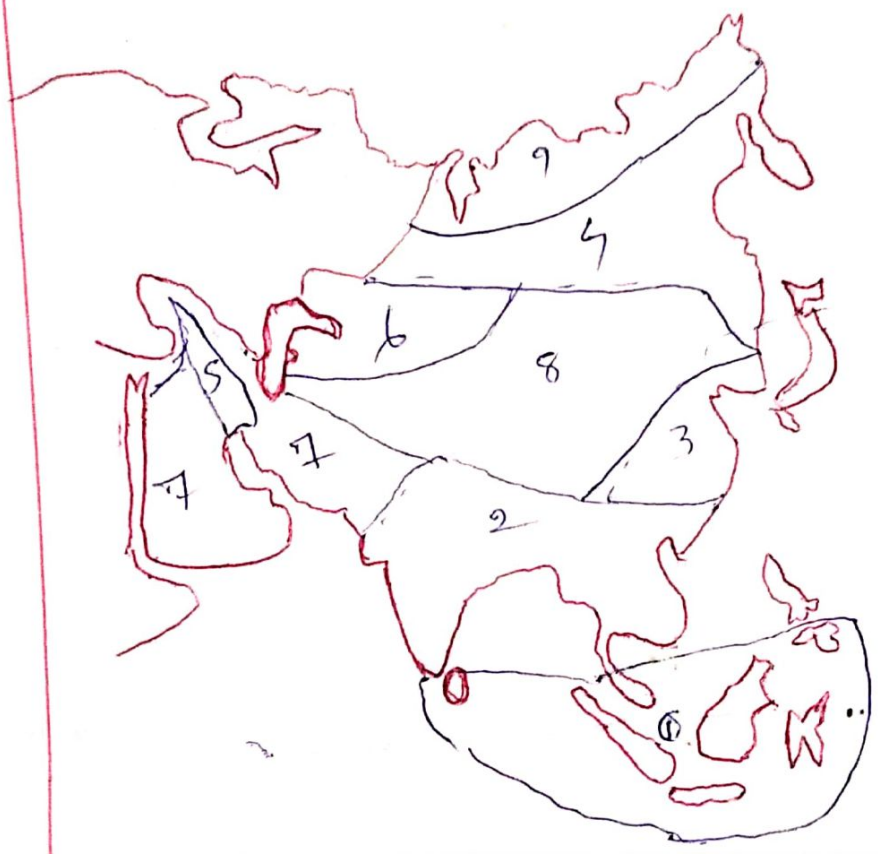

Scanned by CamScanner